

श्री शारदा व वही पूजा

की

→ ❁ सामग्री ❁ ←

उर्दी, रोपडा आदि

नई कलम

दवात

घोंरा

बुसुम

वामरूप या बुसुमात्रणी

माली

जल या पत्रामृत

चन्दन व रमर

सुगन्धित पुष्प

धूप व अगर पत्ती

शुद्ध घी का टापक

अक्षत, (अमरगट चावल)

नवय (पत्रमवा मिठाई आदि)

फा

रूपर

आरती केलिये थाली



श्री दीपमालिका पूजन

श्री शारदा व वही पूजन सहित

लेखक—

पं० ईश्वरलाल जैन स्नातक

न्यायनीय विद्याभूषण विशारद

सम्पादक व प्रकाशक—

शाह नानालाल एम चौरड़िया,

स्नानेरी मैजस्त्र—

श्री तिलक विजय जैन ज्ञान भण्डार,

सिलडर (मिरोही) बापा माउण्ट आबू

वीर सक्क

२४६६

प्रथमावृत्ति

१०००

विक्रम सबन्

२०००

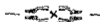
मूल्य—पाच आना

२६ दीवली का भजन २

(तर्ज—मैरवा—अब तो प्रभु श्री का ले ला शरण)

जया जग स्वामी वीर जिनद ॥ ८ ॥

नगर आषाढा में प्रभु आये, भविजन का उपकार करद ॥१
 निज निश्चयन समय को जानी, सोला पहर प्रभु धम कहद ॥२
 कार्तिक वदि पदरम की राते, प्रात काल प्रभु मुक्ति लहद ॥३
 परमात्म पद छिनक में लीनी, आठ कम का दूर हरद ॥४
 कल्याण निर्वान मन्तर, कारण मिल कर आय सरीद ॥५
 पावा नगरी नाम कहाया, अस्त भया जिहा ज्ञान दिनद ॥६
 नय मली नय लेच्छी राजा, शोक अतिशय दिल में धरद ॥७
 भाव उद्यात गया अब जग से, द्रव्य उद्यात का टाप करद ॥८
 तिस कारण दीवली हाइ, ध्यान धरा प्रभु वीर जिनद ॥९
 कार्तिक सुदि एकम दिन थाव, भीतम केवल ज्ञान गहद ॥१०
 शातम राम परम पद पामे, बल्लभ चित में हय अमंद ॥११



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

मुद्रक—

प० ईश्वरलाल जैन स्नातक

प्रभात प्रिंटिंग प्रस चूड़ी सराय मुजतान शहर ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

भूमिका

दीवालीपर्व का माहात्म्य—आज से लगभग अट्ठाई हजार वर्ष पहिले जैन धर्म के २४वें तीर्थङ्कर श्री महावीर स्वामी का कार्तिकवदि अमावस्या को पावापुरी नगरी में निराग हुआ था । भगवान का निवाणीत्सव मनाने कलिण देवताओं व मनुष्या ने अनेकों दीपक जागृत कर अमावस्या के अन्धकार में रूख प्रकाश किया था उसी ही समय से दीवाली का पर्व प्रति वर्ष मनाया जाने लगा ।

भगवान महावीर प्रभु के निराग के साथ उसी दिन उनके मुख्य शिष्य श्री गौतम स्वामी जी को वचलज्ञान हुआ, इस से दीवाली पर्व और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गया ।

वर्तमान समय में अन्य धमावटम्बी भी इस पर्व का सम्बन्ध अपने अवतारों व प्रवर्तकों से मान कर बड़े आनन्द और उत्साह से इस पर्व को मनाते हैं । ओर इस कारण यह पर्व लोकप्रिय हो गया है ।

इस समय भले ही कोई इस का सम्बन्ध श्री रामचन्द्र जी, स्वामी दयानन्द जी व स्वामी रामतीर्थ जी आदि

से बतलायें परन्तु इस पर्व का प्रारम्भ तो भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण से मानना होगा । जो लोग इस पर्व का प्रारम्भ हठात् दूसरी बातों से जोड़ते हैं उन का ध्यान निष्पक्ष अजैन विद्वानों की ओर आकृष्ट करना चाहता हूँ, उन के निम्न दिये गये विचारों का अवलोकन कर पाठक स्वयं निराश्रय कर कि इस पर्व का प्रारम्भ कहा से है--

‘ भगवान् वीर सारे ससार क कल्याण कर्ता, सर्वोत्कृष्ट परमात्मा, पूण अहिंसा वादी और सत्यप्रिय थ । दीवाली का पुनीत पर्व उन्हीं के निवासोपलक्ष्य में उन की कृतज्ञ जनता न निमाण किया था । ’

--श्रीयुत लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ।

उन्हीं लोगों ने निर्वाण न जैनधर्म धारण किया था--धरने परम गुरु की स्मृति में जबकि वीर प्रभु ने निर्वाण प्राप्त किया था, दीपक जलाये थ और महा विशद उत्सव रचाया था सभी स भारत धर में दीपावली का त्योहार मनाया जाने लगा ।

--रवीन्द्रनाथ टागौर ।

‘ वीर प्रभु के पर्व गात्र के दिन की अपेक्षा उन निर्वाण का दिन और भी अधिक महत्व प्रद है । जिस दिन कृतज्ञ जनता ने उन के मुक्ति लाभ की खुशी में दीवाली नामक त्योहार प्रचलित करके धरणी अनुपमेय भक्ति का परिचय दिया था ।

--साधु टी० एल० वास्वानी ।

“ जिन-शातपुत्र का निवाण दिन उनके जन्म दिन की अपेक्षा अधिक उत्सव का दिवस था क्योंकि महावीर ने उस दिन निवाण को प्राप्त किया था । उन का मोक्ष कार्तिक वदी अभावस्था क दिन हुआ

उन की मोक्ष प्राप्ति के अवसर पर पावापुरा निवासियों ने दीपालिका की थी, उस दिन से एक पावापुरी ही नहीं बल्कि भारत वष की सभी नगरियों में महावीर निर्वाण व उपलक्ष्य में दीपोत्सव करने लगे, और वह कुछ सदियों में जातीय महोत्सव हो गया। दीपक ज्ञान का द्योतक है, ज्ञानी और ज्ञान दाता महावीर की स्मृति के लिये इस उपयुक्त अधिक महोत्सव और कौनसा हो सकता है ?

—हिन्दी के आद्य प्रचारक श्री भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

मसार का कोई भी धर्म महावीर की दया के सिद्धान्तों की समानता नहीं कर सकता। महावीर सारी दुनिया व अकारण व उ जीवन मुक्त परमात्मा थे। दीपमालिका का पव उर्दी के मात्त लाभ समय से सारे भारत वष में प्रचलित हुआ।

—श्री ईश्वर चन्द्र विद्यामागर।

दीवाली पर्व की तरह भाई दूजका प्रारम्भ भी उर्मा समय से हुआ। भगवान महावीर व निर्वाण के पश्चात् महावीर स्वामी के बड़े भाई राजा नन्दीवर्द्धन का शोक दूर करने केलिये उन की बहिन सुदर्शना ने उन्हें बुलवाकर भोजन कराया और तब से उनकी यादगार में ऐसी प्रथा आज तक चली आरही है—कि बहिन अपने भाई को बुला कर भोजन कराती हैं।

भगवान महावीर का निर्वाणोत्सव समस्त भारतवर्ष में ध्यानन्द व उत्साह से मनाया जाता है। विशेषतः भगवान की निर्वाणभूमि पावापुरी में तो बड़ी धूम धाम से मला लगता है और प्रतिवर्ष हजारों व्यक्ति इकट्ठे हाते हैं।

(घ)

गुजरात काठियावाड आदि जगों में दीर्घाली से ही वर्ष का प्रारम्भ मानते हैं, और समस्त भारतवर्ष में व्यापारी वर्ग इसी ही दिन से नयी बही आदि रखत एवं बही पूजा आदि करत हैं। बही पूजा वास्तव में ज्ञान की पूजा ही है। क्योंकि तार्यङ्गों की वाणी सुनने र लिये आयावर्त का यह अन्तिम दिन था। इस लिये ज्ञान की शारदा-सरस्वती का पूजा भी इसी दिन हान लगा।

श्री शारदा व बही पूजा का विधि-विधान अन्य धर्मा में भिन्न २ तरह स मिलता है परन्तु जैनधर्मानुया यियों की जैन विधि से ही पूजन करना चाहिय, उन्हीं क लाभार्थ यह पुस्तक पाठकों के समक्ष रखी जा रही है।

इस पवित्र पर्व क दिन कई व्यक्ति जुथा खेलना, पटाखे चलाना आदि भी अपना आवश्यक कृत य समझत हैं। परन्तु जा बुराई है वह ता बुराई हा रहेगी, भलहा किसी अच्छे दिन हा क्यों न की जाये। इस लिये इन कुप्रथाओं को सत्रथा छोड दना चाहिये ओर इस पर्व को उत्तमात्तम क्रियाओं से मनाना चाहिय, वास्तव में लौकिक तथा लोकात्तर सुख प्राप्त करने क लिये यह एक अपूर्व पर्व है।

श्री धारमानन्द जैन गुरुकुल पञ्जाप
गुजरावाला, १३ ८-४३

इश्वरलाल जी

विषय सूची

	पृष्ठ
दापमालिका पर्व का प्रारम्भ व मान्यता	१
श्री शारदा व वही पूजा में ध्यान देने योग्य बातें	२
वही पूजा व वही में लिखने की विधि	४
मङ्गलश्लोक-सरस्वती आह्वान मन्त्र	६
स्तुति पाठ	७
मन्त्रों द्वारा पूजन विधि	८
श्री शारदा सरस्वती स्तोत्र	९
आरती	११
श्री गीतमाष्टक (संस्कृत)	१२
श्री गीतमाष्टक (हिन्दी)	१३
सरस्वती वाप मन्त्र आदि	१४
दीवाली की रात को करने योग्य क्रिया-जाप मंत्र	१५
महार्वाह निवागात्मव विधि	१५
दीवाली की स्तुति	१६
महार्वाह प्रभु-दावाली की आरती	१७
दीवाली का चैत्यवन्दन	१८
निवागकल्याणक स्तवन	१९
दीवाली की थुई	२०
गीतम स्वामी का बड़ा रास	२१
गीतम स्वामी का छोटा रास	२०

समर्पण

स्वपर शास्त्र पारगत,
चारित्र चूडामणि परम जाल सपन्न
विश्वोपकारी मुनिराज

श्री श्री १००८ मुनि श्री तिलक विजय जी महाराज

+ की पवित्र सेवा में +
यह

लघु पुस्तक
सादर समर्पित है ।

आप का ही

छत्र छाया में अनेक आत्मार्थी भक्त जाव
अपनी आत्मा का साधन
कर रहे हैं ।



मुनि नहाराज श्री श्री १००८
श्री त्रिलोक विजय जी महाराज म० सिद्धार्थ

दीपमालिका पूजन

श्री शाखा एव वही पूजा सहित

॥ महानाचाण ॥

श्री मते वीरनाथाय सनाथापाद्भुतश्रिया ।

महानन्दसराराज मरालायार्हते नम ॥

दीपमालिका पर्व भगवान महावीर के निर्वाण से प्रारम्भ हुआ परम पवित्र एवं शुभ पर्व है । इस सर्वोत्तम पर्व को प्राय सभी जातिया तथा प्रत्येक धर्म के अनुयायी किसी न किसी रूप में आराधन करते हुए बड़े महोत्सव व आनन्द से मनाते हैं । गुजरात में इसी दिन

से नये वर्ष का प्रारम्भ माना जाता है, और समस्त भारत वर्ष के व्यापारी इस शुभ और पवित्र दिन से श्री शारदा व वही पूजन कर अपने नये वर्ष का हिसाब चालू करते हैं। जैन समाज के लिये यह दिन बहुत अधिक महत्व का है, प्रत्येक जैनधर्मानुयायी को श्री शारदा व वही पूजन जैन शास्त्रानुसार-विधि से करना चाहिये, अतः यहाँ पर जैन पद्धति अनुसार श्री शारदा व वही पूजन लिखते हैं।

६ विधि में ध्यान देने योग्य बातें २

१ - पूजन प्रारम्भ करने से पहिले पूजा गृह (पूजा के स्थान) को सुन्दर चित्रों तथा अन्य सजावट की चीजों से सुशोभित कर लेना चाहिये।

१ - पूजा करने वाले सज्जनों
हो एवं शुद्ध

दिव्याभरण से अलकृत हो पूजन के लिये तैयार होना चाहिये ।

- ३-शुभ चौघड़िया एवं नक्षत्र देखकर शुभ मुहूर्त में नई चही, दस्तरी, कागज, कलम, दवात आदि शुद्ध स्वच्छ चौकी, पट्टे या वाजोट पर पूर्व या उत्तर दिशा में स्थापन करे ।
- ४-चौकी के आस पास शुद्ध घी के दीपक तथा धूप, अगरबत्ती आदि जागृत करने चाहिये ।
- ५-पूजन करने वाले सज्जनों को शुद्ध आसन पर बैठकर तथा तीन नवकार मन्त्र बोलकर अपने दायें (सीधे) हाथ में कङ्कण अर्थात् मोली लच्छा बांध लेना चाहिये । इसी तरह कलम, दवात आदि को भी नवकारमन्त्र बोलते हुए मोली लच्छा बांधना चाहिये ।
- ६-सामने ही उत्तम चौकी या पट्टे पर चादी की या अन्य किसी शुद्ध रकेवी से सजावट

कर उस में शारदा अथवा श्री गौतम प्रभु
की मूर्ति प्रथम चित्र स्थापित करे ।

⇒-+ ; +-←

वही पूजा

पूजन की सफल सामग्री सम्पन्न होने पर
शुद्ध लेखनी से वही पर सर्व प्रथम^x सुन्दर
अक्षरों में मन्दिर के शिखर की तरह एक से
न्यूनतम 'श्री' क्रमशः लिखे । अगर वहाँ छटा
हो तो उसके अनुसार सात, पाँच या तीन लाइनों
में लिखे—

x यदि न उक्त यों वर में स्वच्छ और फिर श्याम न श्री का
शिखर व महापुराण के नाम दिया है। जो वह स्थान पर प्रथा
है वही शान्ति पर धर्मों में पुस्तकें व नाम फिर श्री का
जिखर व स्वच्छ करनी देनादि निश्चय प्रथाया म स किया
व लिख भाँजाई, भाय आग्रह नहीं है । दश बाल मयादा
व परम्परानुसार जिस जो विधि मालूम है । (या लिखन का
प्रथम रथ मयन है ।

[५]

ॐ अर्हं नम

श्री

श्री श्री

श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

श्री लाभ



श्री शुभ

७४॥ वन्देवीरम श्री परमात्माने नम ।
श्री सद्गुरुभ्यो नम । श्री स्वस्वत्ये नम । श्री
गौतम म्यामी जी जैसी लट्टिय हो । श्री केशरिया
जी जैसा भण्डार भरपर हो । श्री भरतचक्रवर्ती
जैसी चट्टि प्राप्त हो । श्री अ
बुद्धि प्राप्त श्री बाहुवल जी जैसा

श्री कयपत्ता सेठ जैसा नौभाग्य मिले, तथा श्री धन्ना शालिभद्र जी जैसी सम्पत्ति प्राप्त हो ।

• अथ वीर सप्त २७ विक्रम स० २०

शुभ मिति कार्तिक अदि वार तदनुसार तारीख माह ईस्वी सन् १६

इस तरह से नये वर्ष, सप्त, मास, दिन आदि लिखकर नीचे नया हिसान चालू कर दे ।

इस प्रकार लिखने के पश्चात् घर्हा रख कर उस के चारों ओर फिरती जल धारा देवे । और उसके बाद वामक्षेप या कुकुम अक्षत (चावल) और फूल हाथ में लेकर निम्नलिखित मङ्गल व आदान मन्त्र पढ़ कर सन्मुख चढ़ा दे ।

॥ मङ्गल रत्नोक्त ॥

मङ्गल भगवान् वाग, मङ्गल गीतम प्रभु ।

मङ्गल स्थूलमद्राया, जैनधर्मास्तु मङ्गलम् ॥

। आदाने म ३ ॥४

ॐ ह्रीं श्रीं ह शारद ममगृहे आगच्छ आगच्छ स्वाहा ।

यह पढ़कर हाथ में ली हुई कुसुमाञ्जलि चढ़ा दे, और हाथ जोड़ कर भक्ति पूर्वक निम्न स्तुति पाठ करे।

ॐ स्तुति ॐ

मंत्राय श्रीमदहंन्तः सिद्धा सिद्धिपुरीपदम् ॥
 आचाया पञ्चगचार वाचका वाचनारराम् ॥१॥
 मात्र सिद्धि साहाय्य, रितन्वन्नु विरेकिनां ॥
 मद्गलाना च सर्वेषा-माद्य भवति मद्गलम् ॥२॥
 महामित्यक्षर माया- बीजं च प्रणवाशरम् ॥
 एत नाना स्वरूप च, ध्येय ध्यायन्ति योगिनः ॥३॥
 हृत्पद्मपोडशदल-स्थापित पोडशाक्षरम् ॥
 परमेष्ठि म्नुतं बीजं ध्यायेदशरद मुदा ॥४॥
 मन्त्राणामादिम मन्त्र तत्र विघ्नोघनिग्रहे ॥
 ये स्मरन्ति सदैवेन ते भवन्ति जिनप्रभा ॥५॥

इस के वाद मन्त्रों द्वारा अष्टद्रव्य [१ जल
 २ चन्दन, ३ पुष्प, ४ धूप, ५ दीप, ६ अक्षत
 (अखण्ड चावल) ७ नैवेद्य (मिठाई) और ८
 फल] से पूजन करे।

ॐ ह्रीं श्रीं भगवत्यै, केवल ज्ञान स्वरूपायै, लोकोलोक
प्रकाशिकायै सरस्वत्यै 'जल' समर्पयामि स्वाहा ।

यह मन्त्र पढ़ कर जल चढ़ावे ।

ॐ ह्रीं श्रीं भगवत्यै, केवल ज्ञान स्वरूपायै, लोकोलोक
प्रकाशिकायै सरस्वत्यै 'चन्दन' समर्पयामि स्वाहा ।

यह मन्त्र पढ़ कर चन्दन चढ़ावे ।

ॐ ह्रीं श्रीं भगवत्यै, केवल ज्ञान स्वरूपायै, लोकोलोक
प्रकाशिकायै सरस्वत्यै 'पुष्प' समर्पयामि स्वाहा ।

यह मन्त्र पढ़ कर सुगन्धित फूल चढ़ावे ।

ॐ ह्रीं श्रीं भगवत्यै, केवल ज्ञान स्वरूपायै, लोकोलोक
प्रकाशिकायै सरस्वत्यै 'धूप' समर्पयामि स्वाहा ।

यह मन्त्र पढ़ कर धूप चढ़ावे ।

ॐ ह्रीं श्रीं भगवत्यै, केवल ज्ञान स्वरूपायै, लोकोलोक
प्रकाशिकायै सरस्वत्यै 'दीप' समर्पयामि स्वाहा ।

यह मन्त्र पढ़ कर दीपक से पूजा करे ।

ॐ ह्रीं श्रीं भगवत्यै, केवल ज्ञान स्वरूपायै, लोकोलोक
प्रकाशिकायै सरस्वत्यै 'अन्न' समर्पयामि स्वाहा ।

यह मन्त्र पढ़ कर अन्नचढ़ाव चावल

ॐ ह्रीं श्रीं भगवत्यै, केवल ज्ञान स्वरूपायै, लोकालोक
प्रकाशिकायै सरस्वत्यै 'नैवेद्य' समर्पयामि स्वाहा ।

यह मन्त्र पढ़कर मिठाई या मिश्री आदि
चढ़ावे ।

ॐ ह्रीं श्रीं भगवत्यै, केवल ज्ञान स्वरूपायै, लोकालोक
प्रकाशिकायै सरस्वत्यै 'फल' समर्पयामि स्वाहा ।

यह मन्त्र पढ़कर फल चढ़ावे ।

इस प्रकार पूजन कर लेने के बाद हाथ जोड़
कर भक्ति पूर्वक श्री शारदा स्तोत्र पढ़े ।

॥ श्री शारदा सरस्वती स्तोत्र ॥

(१ द्रवज्जा पृष्ठम्)

वाग्देवते भक्तिमता स्वशक्ति कलाय विभ्रासित विग्रहा मे ॥

गोध निशुद्ध भवति विधत्ता कलाय विभ्रासित विग्रहा मे ॥१॥

श्रवप्रवीणा कलहसपत्ना कृतस्मरेणा नमता निहतुम् ॥

श्रुप्रवीणा कलहसपत्ना सरस्वती शश्वद पोहताह ॥२॥

ब्राह्मी विज्ञेपीठ विनिद्रकुद-प्रभावदाता घनगर्जितस्य ॥

स्वरेण जैत्री ऋतुर्ना स्वकीय-प्रभावदाता घनगर्जितस्य ॥३॥

मुक्ताक्षमाला,

सुखाम सुज्वलाभाति करे

कर्म प्रशास्त्र प्रशा ममाति जयालुनाना मवपाठकानि ॥
 मन्त्राना नार्गन वृ टर्गिक जयालुनाना म-पाठकानि ॥५॥
 मन्त्रप्रशास्त्र मन्त्रमन्त्रचन दशनामि येनामि विराजि हस्ता ॥
 मन्त्रप्रशास्त्र मन्त्रमन्त्रचन विद्या मृया पूरमदूर दु म्वा ॥६॥
 मन्त्रप्रशास्त्र क्रियत मयन मरालपन प्रमदेन गात ॥
 मन्त्रप्रशास्त्र मन्त्रमन्त्रचन नद्य मगलयेन प्रमदेन वात ॥७॥
 मन्त्रप्रशास्त्र मन्त्रमन्त्रचन मन्त्रमन्त्रचन तैऽप्रियुग्म ॥
 मन्त्रप्रशास्त्र मन्त्रमन्त्रचन सखरस्य गाति विदुषा प्रविज्य ॥८॥
 मन्त्रप्रशास्त्र मन्त्रमन्त्रचन ललाभिरामो दितमानवेग ॥
 मन्त्रप्रशास्त्र मन्त्रमन्त्रचन चिन्तात्र गाभिरामा दितमानवेग ॥९॥
 मन्त्रप्रशास्त्र मन्त्रमन्त्रचन नथनाभिरामा मूर्ति सनाराध्यभवेन मनुष्य ॥
 मन्त्रप्रशास्त्र मन्त्रमन्त्रचन नथनाभिरामावकारसूर्य चितिपावतस ॥१०॥
 मन्त्रप्रशास्त्र मन्त्रमन्त्रचन त्वामशु सर्वं तार्थ्य समाजिता मानत मरतकेन ॥
 मन्त्रप्रशास्त्र मन्त्रमन्त्रचन त्वादिना निदलित नरेन्द्र समाजिता मानत मरतकेन ॥११॥
 मन्त्रप्रशास्त्र मन्त्रमन्त्रचन वक्तावरतामसमकलीना मानीगती प्रपराभयर पादशैल ॥
 मन्त्रप्रशास्त्र मन्त्रमन्त्रचन मयत्तवक्तावरतामसमकलीना प्रीणातु
 मन्त्रप्रशास्त्र मन्त्रमन्त्रचन मन्त्रमन्त्रचन मन्त्रमन्त्रचन मन्त्रमन्त्रचन

॥ आरती ॥

(तर्ज— ॐ जय जगदीश हरे)

ॐ जय नय त्रिनवाणी ।

आत्म कमल विकाशे, ध्यावें मुनि ज्ञानी ॥ टेक ॥

(१)

तीर्थकर त्रिपदी फरमावें, गणधर भाष्य रचे ।

ज्ञान का मर्म जा पावे, नहिं भव-जाल फमे ॥ ॐ ॥

(२)

श्री सर्वज्ञदेव की वाणी, मिथ्यावाद हरे ।

नय, प्रमाण की ज्योती, पूर्ण प्रकाश करे ॥ ॐ ॥

(३)

ज्ञान कल्पतरु, कामधेनु है, ज्ञान सुधासागर ।

ज्ञान, क्रिया, श्रद्धा से, लहें पद अजरामर ॥ ॐ ॥

(४)

वीणा वादिनी, ग्रन्थधात्रिणी नय शारदा माता ।

हसवाहिनी, देवी, बुध-आश्रय-दाता ॥ ॐ ॥

(५)

जड, चेतन का भेद ज्ञान से ज्ञानी है पावे ।

“राम” प्राप्त कर रेवेल, भवजल तर जाते ॥ ॐ ॥

इस प्रकार आरती करने के बाद गौतमाष्टक
पाठ करना चाहिये

ज्ञान प्रणातु प्रवणा ममाति श्यालुनाना भवपातकानि ॥
 त्वनेमया भारति पृ ढरीर श्यालुनाना भवपातकानि ॥१॥
 प्रौढ प्रभावा समपुस्तकन घशातामि यनामि विराजि दृस्ता ॥
 प्रौढ प्रभावा समपुस्तकेन रित्रा सुधा पुरमदूर टु साः ॥६॥
 तुभ्य प्रणाम क्रियत मयन मरालयन प्रमदन गात ॥
 शक्ति प्रतापै, भुवितस्य नम्र मगलयेन प्रमदन पात ॥७॥
 रच्यारविन्द भ्रमद कराति दल यदि याऽचात तंऽप्रियुग्म ॥
 रच्यारविन्द भ्रमद कराति सस्वरय गाष्टि विदुषा प्रविश्य ॥८॥
 पाद प्रसादात्तव रूपसपत् तस्याभिगमो दितमानवेश ॥
 अवन्नर सुक्तिभिरेव विन्नात्र त्याभिरामा दितमानवेश ॥९॥
 सितांगुका ते नयनाभिरामा मूर्ति सनाराध्यभवेन मनुष्य ॥
 सितांगुर्गा ने नयनाभिरामाधरार्सुर्न चित्तिपावतस ॥१०॥
 यनस्थित त्वाममु सर्व तीर्त्य समाजिता मानत मरतकेन ॥
 दुषादिना निदलित नरेन्द्र समाजिता मानत मरतकेन ॥११॥
 सर्वज्ञ वक्तावरतामसमहर्षीना मार्नीगती प्रयणमवर पादगैत ॥
 सवज्ञ वक्तावरतामसमहर्षीना प्रीणातु विश्रुतयश श्रुतदेवतान
 कृमन्तुति निमिड भक्तिजडपृत्तैगुपैगिरामितिगिरामधि देवतासा
 बालानुकष इतिरोपयतुप्रसाद शमराटश मपिजिनप्रभसुरि यथा ॥

उक्त स्तोत्र बोलने के अनन्तर एक थाली
 में दीपक व कपूर जाणत करके आरती उतारनी

॥ आरती ॥

(नम्रं—ॐ जय जगतीश्वर)

ॐ जय जय जिनवाणी ।

आत्म कमल विकाशे, ध्यावें मुनि ज्ञानी ॥ टेक ॥

(१)

तार्क्ष्य त्रिपदी फरमावें, गणधर भाष्य रचे ।

ज्ञान का मर्म जा पावे, नहीं भव जाल फमे ॥ ॐ ॥

(२)

श्री सर्वज्ञदेव की वाणी, मिथ्यावाद हरे ।

नय, प्रमाण की ज्योती, पूर्ण प्रकाश कर ॥ ॐ ॥

(३)

ज्ञान कल्पतरु, कामधेनु है, ज्ञान मुधासागर ।

ज्ञान, क्रिया, श्रद्धा से, लहे पद अजरामर ॥ ॐ ॥

(४)

वीणा वादिनी, ग्रन्थप्रारिणी जय शारदा माता ।

हसवादिनी, देवी, बुध-आश्रय-दाता ॥ ॐ ॥

(५)

अह, चेतन का भेद ज्ञान से ज्ञानी हैं पाते ।

“राम” प्राप्त कर केवल, भवजल तर जाते ॥ ॐ ॥

इस प्रकार आरती करने के बाद गौतमाष्टक

॥ श्री गीतमाष्टक ॥
(इन्द्रवज्रा वृत्तम्)

श्रीइन्द्रभूति वसुभूति पुरं, पृथ्वीभव गीतम गोत्र रत्नम् ।
स्तुवन्ति देवासुरमानवेन्द्रा स गीतमो यच्छतु वाञ्छित मे ॥१॥

श्रीवधमानात् त्रिपदीमवाप्य मुहूतमात्रेण कृतानि येन ।
शमानि प्रवाणि चतुर्दशापि स गीतमो यच्छतु वाञ्छित मे ॥२॥

श्रीवीर नाथेन पुरा प्रणीत मत्र महानन्दमुखाय यस्य ॥
ध्यायन्त्यमी सूरिवरा समग्रा स गीतमा यच्छतु वाञ्छित मे ३॥

यस्याभिधान मुनयापि सर्वे गृह्णन्ति मिथा अमरणस्य काले ।
मिथानपानाम्बर पूणकामा स गीतमा यच्छतु वाञ्छित मे ॥४॥

अष्टापदाद्रो गगने स्वशक्त्या ययो जिनाना पदवन्दनाय ।
निशम्य तावानिशय सुरभ्य स गीतमा यच्छतु वाञ्छित मे ॥५॥

त्रिपञ्च सख्या शततापसाना तप कृशानामपुनर्भवाय ।
अश्रीण लब्ध्या परमाज्ञदाता स गीतमा यच्छतु वाञ्छित मे ॥६॥

सदक्षिण भाजनमेव देय माधमिक सद्य समर्पयेति ।
कैवल्य वस्तु प्रददौ मुनीना स गीतमा यच्छतु वाञ्छित मे ॥७॥

शिखरगते भर्तारि वीर नाथे युग प्रधानत्वमिहैव मत्वा ।
पट्टाभिषेको विदधे सुरेन्द्रै स गीतमो यच्छतु वाञ्छित मे ॥८॥

त्रैलाक्य वाज परमेष्टि वाज सद्ज्ञान वीज जिन राज वीज ।
पत्राम चाक्त विदधाति सिद्धि स गीतमो यच्छतु वाञ्छित मे ॥९॥

श्रीगीतमस्याष्टकमादरेण प्रनाथकाले मुनिपुङ्गवा य ।
पठन्ति त सूरि पदै सदैवा-नन्द लभति सुतरा क्रमेण ॥१०॥

अगूठे अमृत वसे लटितगो भण्डार ।
 ते गुरु गीतम समरिये वाछित फल दातार ॥१॥
 प्रभु वचन त्रिपदी लही सूत्रचे तिनवार ।
 चौदह पूरव में रचे लोकांलोक विचार ॥२॥
 भगवती सूत्रे करनमी चम्भि लिपि जयकार ।
 लाक लोकोत्तर सुख भणी भाषा लिपि आधार ॥३॥
 वीर प्रभु सुखिया थया दीवाली दिनसार ।
 अन्तर मुहूर्त तत्क्षणे सुखियो सह संसार ॥४॥
 केवल ज्ञान लहे तदा श्रीगीतम गणधार ।
 सुरनर हरपभरी प्रभु करे अभिषेक उदार ॥५॥
 सुरनर पयदा आगले भाषे श्रीश्रुत ज्ञान ।
 ज्ञानथकी जग जानियो द्रव्यादिक सुख जान ॥६॥
 त श्रुत ज्ञानको पूजिये, धूप, दीप मनोहार ।
 वीर भागम अविचल रहा वर्ष इकोस हजार ॥७॥
 गुरु गीतम अष्टक कही आणी हर्ष उलास ।
 भावधरी जे समरणे शूरे सरस्वीती आस ॥८॥
 पूर्वोक्त अष्टक समान होने पर पूर्व या उत्तर
 दिशा की ओर मुह कर एकाग्र चित्त से निवृत्त

लिखित सरस्वती मन्त्र की एक, तीन या पाच मालायें जपे । धूप दीप जागृत रहना चाहिये ।

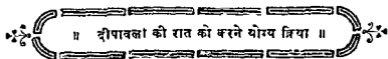
॥ सरस्वती मन्त्र ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं लीं श्रीं ह्रीं ऐं नम ।

इसके बाद निम्नलिखित श्लोकों से विसर्जन करते हुए विधि में कोई दोष लगा हो उसके लिये क्षमा याचना करे ।

श्राद्धाहीन क्रिया हीन मन्त्र हीन च यत्कृतम् ।
 तत्सर्वं क्षम्यता देवि, प्रसीद परमश्वरि ॥१॥
 आह्वान नैव जानामि, नैव जानामि पूजनम् ।
 विसर्जन नैव जानामि, क्षमस्व परमश्वरि ॥२॥
 अपराध सहस्राणि क्रियन्त नित्यशो मया ।
 तत्सर्वं क्षम्यता देवि, प्रसीद परमेश्वरि ॥३॥

इस प्रकार पूजन विधि समाप्त होने पर सुपात्र को यथोचित दान देना चाहिये, और उसके बाद गात्रि जागरण करना चाहिये ।



दीपावली की रात को जाग्रत रहते हुए रात्रि के चतुर्थ पहर रहने से पहले—

ॐ ह्रीं श्रीं महावीर स्वामी सर्वज्ञाय नम ।

ॐ ह्रीं श्रीं महाधर स्वामी पारंगताय नमः ।

इन मन्त्रों की २०-२० माला अर्थात् प्रत्येक का दो दो हजार का जाप करना चाहिये ।

इसके बाद निम्नलिखित मन्त्र की भी २० माला अथवा दो हजार का जाप करना चाहिये ।

ॐ ह्रीं श्रीं गोतम स्वामी त्रैल ज्ञानाय नम ।

इसके बाद दो घड़ी रात्रि बाकी रहे तब महावीर प्रभुका निर्वाणोत्सव मनाने केलिये अच्छे अच्छे स्वच्छ एव सुन्दर वस्त्रालङ्कार पहन कर और एक पात्र में दीपक व मोदक लेकर श्री जिन मन्दिर में जावे । भगवान के सन्मुख मोदक हस्त में ग्रहण कर ॐ ॐ ॐ । स्तुति पढे ।

पापाया पुरि चारु पठ तपसा पर्यक पर्यासन,
 क्षमापाल प्रभुहस्तपाल विपुल श्रीशुक्लशाला मनु ।
 गासे कार्तिस दर्शनागकरणे तृयारिकाते शुभे,
 स्वाती य गिरमाप पाप रहित सस्तीमि वीर प्रभुम् ॥१॥
 यद्गभागमनोज्ञव व्रतवर ज्ञानाक्षरासि क्षणे,
 सभूयाशु सुपव सततिग्हा चक्र महस्तत् क्षणात् ।
 श्रीमन्नाभि भवादि वीरचरमास्ते श्रीजिनाधीश्वरा,
 सचायानवचेतस विदधता श्रयान्पनेनासि च ॥२॥
 अर्वात्पूवमिद जगादजिनय श्रीवद्वमानाभिध,
 तत्पश्चाद्गणनायका विरचया चक्रुस्तरा सूत्रत ।
 श्रीमतीर्य समर्थनैक समये सम्यक् दृशा भूष्पृशा,
 भूयाद्भावुक कारु प्रवचन चेतश्मत्कारियत् ॥३॥
 श्रीतीर्थाधिपतीर्य भावनपरा सिद्धायिका देवता,
 चक्रचक्र धरासुग सुरनता पायाद् पायादसौ ।
 अर्हन् श्रीजिनचन्द्रगीस्तुमतिना भव्यात्मन प्राणिना,
 यागक्रवमकष्ट हस्ति निधने शादूल विक्रीडितम् ॥४॥

इस स्तुति के बाद मोदक चढा दे और
 दीयाली की आरती करे ।

दीवाली की धारती

ॐ जय महावीर प्रभो ! स्वामी जय महावीर प्रभो !
 सिद्धारथ नृप नन्दन, त्रिसला पुत्र विभो ॥ॐ जय०॥१॥
 च्यौन हुआ श्री जी का, आपाह शुदि छट्ट को ।
 चवद सुपन से आये, त्रिशला के कूखको ॥ॐ जय०॥१॥
 चैत शुदि तेरस को, सुन्दर मुहूरत में ।
 जन्म धरे जिनवरजी, सुर सुरकुमरी नमें ॥ॐ जय०॥२॥
 छप्पन दिक्कुमरी मिल, अशुचि दूर करे ।
 सुरपति मेरु शिखर पर, उच्छव भक्ति करे ॥ॐ जय०॥३॥
 धन वृष्टि कर गये सुर, नन्दीधर तीरथ ।
 राज्य में पुत्र महोत्सव, करे नृप सिद्धारथ ॥ॐ जय०॥४॥
 सिंह लछन से दीपे, कञ्चन सी काया ।
 व्याह करे यशोदा से, सेवे नर राया ॥ॐ जय०॥५॥
 वार्षिक दान को दे कर, सयम व्रत धारा ।
 मिगसिर कृष्ण दसम री, बने जग आधारा ॥ॐ जय०॥६॥
 उपसर्गों का सह कर, ज्ञान केवल पाया ।
 शुदि वैशाख दशम को, बने जिन पति राया ॥ॐ जय०॥७॥
 समोसरन में बैठे, सभी जीव को तारे ।
 बहतर वर्ष की आयू, क्रौडों सुर लारे ॥ॐ जय०॥८॥
 श्रन्विम चामासा को, आय पारा में ।
 हस्तिपाल नगरी में, लेखनशाला में ॥ॐ

पद्मामन से देशना, दो दिन तरु दीनी ।

बला का तप करके, शिव लक्ष्मी लीनी ॥३०॥ जय०॥१०
कार्तिक कृष्णा अमावस, दीपावली ठाना ।

इन्द्रादिक करे उत्सव, करे उत्सव राना ॥३१॥ जय०॥११
धारता कल्याणकी, दर्शन जय जय कार ।

केवली चाग्निबलमे, जय गौतम गणधार ॥३२॥ जय०॥१२॥

इसके बाद दीवाली का चैत्यवन्दन करे ।
विधि पूर्वक तीन खमासमण देने के बाद निम्न
लिखित चैत्यवन्दन पढे ।

॥ दीवाली का चैत्यवन्दन ॥

जय जय श्रीजिन बद्धमान सावन समकाव ।

सिंह लंछन सिद्धार्थ राय त्रिसला सुत भान ॥१॥

वरस बहुतर आऊ देह कर सत् प्रमाण ।

ऋषभादिक सम जास नम इक्ष्वाग सम जान ॥२॥

छठ भक्त सजम लियोरा कुडलग्राम सुर ठाम ।

गणधर इग्यारे सहित श्रीपी शिवपुर स्वाम ॥३॥

चवदह सहस मुनि स्वामि सीस बत्तीस सहस ।

अमणी श्रावक एक लाख गुणसठ सहस ॥४॥

तीन लाख श्राविका बलि सहस अठार ।

सुर मातङ्ग सिद्धाईका नित सानिध कार ॥५॥

पकाकी पावा पुरिए उठ भक्त सुजाण ।

प्रभु पहाता अमृत पदे करो सघ कल्याण ॥६॥

इसके बाद जकिचि, नमुत्थुण, जावतचेइआइ,
जावतकेविसाहू, नमोऽर्हरिसिद्धा, उवसग्गहर के
बाद निम्नलिखित निर्वाण कल्याणक स्तवन पढे ।

॥ निर्वाण कल्याणक स्तवन ॥

मारग देशक मोक्षनोरे, केवल ज्ञान निधान ।

भावदया सागर प्रभुरे, पर उपगारी प्रधानोरे ॥१॥

वीरप्रभु मिद्ध यया, सघ सकल आधारोरे ।

हिंइ इण भरत्तमा कुण कस्से उपगारोरे ॥ वीर० २ ॥

नाथ विहूणो सैन्य ज्युरे, वीर विहूणो रे सघ ।

साधे कुण आधारथी रे, परमानन्द अभङ्गोरे ॥वीर० ३॥

मात विहूणा बाल ज्युरे, अरहा परहाँ अथडाय ।

वीर विहूणाँ जीण्डारे, आकुल व्याकुल थायोरे ॥वीर० ४॥

सशय छेदक वीर नोरे, विरह ते केम सुमाय ।

जेदीठे सुख उपजेरे, ते विण किम रहिवायोरे ॥ वीर ५ ॥

निर्यामक भव समुद्र नोरे, भव अटवी सार्थवाह ।

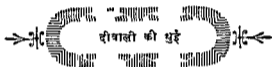
ते परमेसर विण मिल्यारे, किमवाधे उत्साहारे ॥वीर० ६॥

वीर थका पन श्रुत तणोरे, हुतो परम अधार ।

हमणा श्रुत अधार छेरे, ए जिनआगम सारोरे ॥वीर० ७॥

इगकाले सविजीवनेरे, आगम थी आनन्द ।
 ध्याना मेवो भविन्नारे, जिन पडिमासुखकन्दारे ॥वीर०८
 गणधर आचारिज मुनिर, सहुने इणपर सिद्ध ।
 भय भव आगम सगथारे, देवचन्द पदलांधारे ॥वीर०९॥

इसके वाद् जयवीयराय, अनरथ, पढकर
 एक नवकार का ध्यान कर दीवाली की थुई पढे ।



मनोहर मूर्ति महावीर तगी, जिणे सोल पहर देशना पभणी ।
 नव मल्ली नव लच्छी नृपति सुणी, कही शिव पाम्या त्रिभुवन धणी
 शिव पहोता रूपभ चउदश भक्ते, बावीश लह्या शिव मास थिते ।
 छठे शिव पाम्या वीर वली, कार्तिक वदी अमावस्या निमली ॥२॥
 आगामी भावी भाव कह्या, दीवाली करुपे जेह लह्या ।
 पुण्य पाप फल अज्झयणे कह्या, सवीठहत्ति करीने सहह्या ॥३॥
 सर्वा देव मिठी उद्यात करे, परभाते गौतम ज्ञान वरे ।
 ज्ञाननिमल सदगुण विस्तर, जिनशासनमा जयकार करे ॥४॥

॥ दीवाली पूजन समाप्त ॥

श्री गौतमस्वामी का बड़ा रास

वीर जिणेसर चरण कमल कमला कयवासी,
 परामवि पभणिसु सामिसाल गोयम गुरु रासी ।
 मण तण वयण एकत करवि निमुणह भो भविआ,
 जिम निवसे तुम देहगेह गुणगण गहगहिया ॥१॥
 जवुदीव सिरि भरह रिक्त खोणी तळमडण,
 मगध देश सेणीय नरेस रिउदळ वलसडण ।
 धरावर गुवर गाम नाम जिर्हा गुणगण सज्जा,
 विप्प वसे वसुभूट तत्य तसु पुहवी भज्जा ॥२॥
 ताण पुत्त सिरि उदभूइ भूवलय पसिद्धो,
 चउदह विज्जा विविह रूवनारी रस विद्धो (लुद्धो) ।
 विनय विवेक विचार सार गुणगणह मनोहर,
 सात हाय सुप्रमाण देह रूग्घि रभावर ॥३॥
 नयण वयण कर चरण जिणवि परुज जले पाडिअ,
 तेजे तारा चद सूर आकाशे भमाडिअ ।
 रूवे मयण अनग करवि मेलिहओ निरघाडिअ,
 धीरमें मेर गर्भार सिंधु चगिम चयचाडिअ ॥४॥

पेलवि निरवम रूप जास जग जग किंचिअ,
 गङ्गाकी झिल भीत इत्थ गुण मेल्या मचिअ ।
 अहना निधय पुव्वजम्मे जिणवर इण अचिअ,
 रभा पउमा गौरि गग रतिहा विधि वचिअ ॥५॥
 नय बुध नय गुर कवि न काइ असु आगल रहिआ,
 पउसया गुणपात्र छात्र हीडे परिवरिओ ।
 करे निरतर यज्ञरुम मिथ्यामति मोहिअ,
 अणचल हासे चरम नाण ढसणह पिसाहिअ ॥६॥

वस्तु

जवुदीवह, जवुदीवह, भरहवासमि, भूमितल मडण,
 मगधदेस, सणिय नरेसर, वर गुव्वर गाम तिहा, विष्ण वसे
 वसुभूय सुन्दर, तसु पुहवि भज्जा, सयल गुणगण रूवनि-
 हाण, ताण पुत्त विज्जानिला, गायम अतिहि मुजाण ॥७॥

भाषा (बाल दूरी)

चरम जिणोसर केवलनाणी, चउविह सघ पइट्टा जाणी ।
 पावापुर सामी सपत्तो, चउविह देव निकार्याहिं जुतो ॥८॥
 देवहि समवसरण तिहा कीजे, जिण दीठे मिथ्यामति छीजे ।
 त्रिभुवनगुर सिंघासणे वेठा, ततस्सिण मोह दिगते पइट्टा ॥९॥
 क्रोध मान माया मदपूरा, जाए नाठा जिम दिन चौरा ॥
 देव दुदुभि आकाशे वाजी, धर्म नरेसर आव्यो गाजी ॥१०॥

कुसुम वृष्टि निरचे तिहा देवा, चउसठ इद्रज मागे सेवा ।
 चामरछत्रशिरोपरिसोहे, स्वहिजिणवरजग सहु मोहे ॥ ११
 उपसम रसभर वर परसता, योजनवाणि बखाण करता ।
 जाणिअवर्धमानजिनपाया, सुरनर किंनर आवेराया ॥ १२ ॥
 कातसमोहित्य जलहलकता, गयण विमाणहि रणरणकता ॥
 पेलखि इदभूड मन चित्ते, सुर आवे अम्ह यज्ञ हुवते ॥ १३ ॥
 तीर तरडक जिम ते वहिता, समवसरण पुहता गहगहिता ।
 तो अभिमाने गोयम जपे, तिणे अवसरे कोपे तणु कपे ॥ १४
 मूढा लाफ अजाण्यु वाले, सुर जाणता इम वाइ डोले ।
 मो आगल का जाण भलीजे, मेरु अवर किम ओपमा दीजे ॥ १५ ॥

वस्तु

वीर जिणवर वीर जिणवर, नाणसपन, पावापुर सुर-
 महिअपत्तनाह ससारतारण, तिहिं देव निम्महिअ, समोसरण
 बहु सुखकारण, जिणवर जग उज्जोअकर, तेजे करी दिण-
 कार, सिंहासणे सामी ठव्यो, हुओ तो जय जयकार ॥ १६ ॥

भाषा (टाल तीसरी)

तव चडिओ घणमाणगजे, इदभूड भूदेव तो ।
 हुकारो कर सचरिअ, कवणसु जिणवर देवतो ।
 याजन भूमि समोसरण, पखे प्रथमारभ तो ।
 दहदिसि देखे- विव न वध. आवता मर

मल्लिमय तोरण दरुड ध्वज, जासास नव घाट तो ।
 वयर विवर्जित जतुगण, प्रातिहारज आठतो ॥
 सुर नर किंनर असुर वर, इद्र इद्राणी राय तो ।
 चित्ते चमकिय चितवे ए सेवता प्रभुपाय तो ॥१८॥
 सहसकिरण सामी वीरजिण, पेंसव रूप विशाल तो ।
 एह असभवसभर ए, साचो ए इद्रजाल तो ॥
 ता बोलावइ त्रिजगगुरु, इदभूइ नामेण तो ।
 श्रीमुखे ससय सामि सवे, फेडे वदपएण तो ॥१९॥
 मान मल मद ठेनी करी, भगतर्हि नाम्यो सीस ता ।
 पचसयासु प्रत लीओ ए, गोयम पहेलो सीस तो ॥
 बधव सजम सुणवि करे, अगनिभूइ आवेय ता ।
 नाम लेइ आभास करे, ते पण प्रतियोधेय ता ॥२०॥
 इण अनुक्रमे गणहर रयण, थाप्या वीरे अण्यार तो ।
 तव उपदसे भुवनगुरु, मयमशु व्रत बार ता ॥
 विटु उपवासे पारण ए, आपणपे विहरत तो ।
 गोयमसयम जग सयल, जयजयकार करत तो ॥२१॥

वस्तु

इदभूइभ, इंदभूइअ, चढिओ बहुमान, हुकारो करि
 कपता, समासरणे पटुता तुरता, जे ससा सामि सवे, चर-
 मनाह फेडे पुरत, वाधिर्वाज सजाय मन, गोयम भवह विरत्त,
 दिक्क लेइ सिक्खा सहिअ, गणहर पय सपत्त ॥२०॥

भाषा (दाढ चौथी)

आज हृथा सुवहाण, आज पचेर्लीमा पुण्य भरो ।
 दीठा गोयम सामि जा निअ नयणे अमिय सरो ।
 (सिरि गोयम गणार पत्रमया मुनि परवरिय,
 भूमिय करय विहार, भविषण जन पडिरोह करे) ।५
 समत्रमग्ग मझारि, जे ज सशय उपजए,
 ते ते परउपहार, कारण पूछे मुनिपवरो ॥२३॥
 जिहा जिहा तीजे दीगस्व तिहा तिहा केवल उपजेए ।
 आप कने अणहून गोयम दीजे टान डम ।
 गुर उपरि गुरु भक्ति, सामा गोयम उपनिय ।
 एणि उल केवलनाण रागज राखे रग भरे ॥२४॥
 जा अशरद सेल, वदे चढी चउवीम जिण ।
 आतमलणिय वसण, चरम सररीरी साज मुनि ।
 इय टमणा निसुरोवि, गायम गणहर सचरिय ।
 तापस परसपण, तो मुनि दीठा आवतो ए ॥२५॥
 तपसामिय निय अग, अम्हासगति नवि उपजे ए ।
 छिम चढसे टट काय, गज जिम टासे गाजतो ए ।
 गिरुआ एण अमिमान, तापस जा मने चितय ए ।
 तो मुनि चडिओ वेग, आलयवि दिनकर किरण ॥२६॥
 कसणमणि निपपन्न दड कलम ध्वज वड सहिअ ।

५ यह गाथा सबत्र नहीं मिलती, कहीं २ उपलब्ध है।

पशवि परमानन्द, जिगाहर भरनसर महिअ ।
 निय िय काय प्रमाण, त्रिहुदिमि साठअ जिगाह विव
 पणमवि मन उलास, गायम गणहर तिहा धमिय ॥२७॥
 वयरसामीना जाव, तियन् जू भक दव तिहा ।
 प्रतिवाध्याय पु हराक कहराक अघ्ययन भगा ।
 बलता गायम सामि, मवि तापस प्रतिबोध कर ।
 लइ आयग साथ, चाल जिम जुवाधिपति ॥-८॥
 स्वार स्वाड घृत आण, अमिग वूठ थगूठ टर ।
 गायम एकरा पाव, फरावे पाग्गा सव ।
 पचसया शुभ भाव, उज्जल भरिओ स्वार मिस ।
 माचा गुरसयाय, कवल त कवल रूप हुआ ॥-९॥
 पचमथा जिगानाह, समवसरण प्राग्गत्रय ।
 पशवि कवलनाग उपता उज्जाय कर ।
 जागो जणवि पाधूप, गाजती घण मेघ निम ।
 जिणवाणी निसुणावि, नागा हुआ पचसया ॥-१०॥

धरतु

इण अनुक्रम, इण अनुक्रम, नारा पन्नरहसय उपज
 परिवरि, हरि दुरिअ, जिगानाह वदइ, जागोवि जगगुर
 वयण, तिहिनाग अप्पाण निदइ, चरम जिणोसर इम भणे,
 गायम म करिस खेव । छेह जाय आपण सही, होस्या
 तुला रव ॥३१॥

भाषा (ढाल पाचमी)

सामियो ण वीर जिणद, पृनमचद जिम उल्लसिय ।
 विहरियो ए भरहवाममि, वरस बहुतर संवसिय ।
 छव तो ण कणाय पउमेण, पायकमल सघे सहिय ।
 आविया ण नयनान्द नयर पावापुर सुरमहिय ॥३२॥
 पेखिया ण गायमसामि, दवसमा प्रतिबोध करे ।
 आपणो ए त्रिशलादवि, नदन पुहतो परमपए ।
 वलता ए दव आकाश, पेखवि जाणया जिण समे ण ।
 ता मुनि ण मनत्रियवाद, नाटभेट जिम उपनो ए ॥३३॥
 डण ममे ए सामिय देखि, आपकनासू टालिषो ण ।
 जाण तो ण तिहुअण नाह, लोक विवहार न पालियो ए
 अतिभलो ण कीधला सामि, जाणया केवल मागसे ए ।
 चित्तव्यो ए मालक जेम, अहवा केडे लागसे ए ॥३४॥
 हृ किम ए वीर जिणद, भगतहिं भाले भोलव्यो ए ।
 आपणो ए उंचला नह, नाह न सपे साचव्यो ए ।
 साचा ए वीतराग, नेह न हेज टालियो ए ।
 तिणसमे ए गीयम चित्त, राग वैरागे वालियो ए ॥३५॥
 आवतो ए जो उल्लट्ट, रहिता रागे साहिया ण ।
 कवल ए नाण उप्पन्न, गीयम सहिज उमाहियो ए ।
 तिहुअण ए जयजयकार, केवल महिमासुर करे ए ।
 गणवरु ए करय वराण, भविया भव जिम निस्वरे ए ॥३६॥

वस्तु

पद्म गगाहर पद्म गगाहर धरस पञ्चास, गिद्धवासे
सवसिय तीसवरससजम विभूसिय, सिरि केरलनागपुण, वार
वरस त्रिभुवाण नमसिय, राजगृही नयरी ठव्या, वाणवह
वरसाउ, सामी गोधम गुणानिलो नाम मियपुर ठाउ ॥३७॥

भाषा (बाल द्वा)

जिम सहकार कायल टहूर, जिम कुसुमायन परिमल
मडके, जिम चदन सौगधनिधि । जिम गगाजल लहरिया
लहके, जिम उणयाचळ तजे भलके, तिम गायम साभाग-
निधि ॥३८॥ जिम मानसरावर निवस हसा, जिम सुरतर
वइ कणयवतसा, जिम महुयरराजीवधन । जिम रयण्यायर
रयणो विलास, जिम अयर तारागण विरस, तिम गायम गुरु
कळ घन ॥३९॥ पूनमनिसि जिम मसियर सोट, सुरतर
महिमा जिम जगमाहे, पूनम तिमि जिम सप्तसहरो । पचानन
जिम मिरिवर राज नर वर घर जिम मगल गात्र, तिम
जितशासन मुनि पररो ॥४०॥ जिम गुरु तरवर साहे
साखा, जिम उत्तम मुख मधुरी भाषा, जिम वन कतकि
महमहे ए । जिम भूमिपति भुयजल चमके, जिम जिनम-
देर घटा रणक, गीयम लवधे महमद्या ए ।
ए कर चढीश आम, सुरतर सारे वधि
ए वशि हुआ ए । का... पर

महामिद्धि आवे धामी, सामी गोयम अणुसरी ए ॥४२॥
 प्रणव अक्षर पहिलो पभणी जे, माया बीजो श्रवण सुणा
 ज । श्रीभिति सोभा मभवो ए । देवा धुग अरिहत नमाज
 विनय पद उभाय धुणीजे इण मजे गायम नमो ए
 ॥४३॥ पग्वर वसता काय करीजे, देस देसांतर काय
 भमी ज रुवण काज आयास करा । प्रह उठा गोयम
 समरीज, काज समगल ततखिण सी, भू नननिधि विलसे
 तिहा घर ए ॥४४॥ चउदयसय वारोतर वगसे, गोयम
 गणहर देवल दिवस, मीया रविते उपगारपग । आदहि
 गल ए पभणीजे, परव महाच्छेव पहिलो दीजे, रिद्धि-
 द्वि कल्याण करा ॥४५॥ धन माता जिण उयरे वरियो
 न्य पिता जिण कुल अतरिया, धन्य सुगुरु जिण दीविस्व-
 ए । विनयत विद्या भडाग, तसु गुण पुढरी न
 भड पाग, उड जिम साखा विरतरो ए । गायमस्वामीना
 म भणीजे, चउरिह सघ रलियायत कीजे, रिद्धि-वृद्धि
 पाण करो ॥४६॥ कुंकुम चन्दन छडो दिवरावा,
 म मोतीना चारु पुरावो, रयण मिहामण वेमणा ए
 उठा गुरु देणना देणी, भविष जीवना काज मरसी,
 नित मगल उदय करा ॥४७॥

वस्तु

पठम गणहर पठम गणहर वरस पचास, गिहयासे
सबसिय तीसवरससजम विभूसिय, तिरि केरलगाणपुण, चार
वरस तिहुअण नमसिय, राजगृही नयरी ठायी, वाणवइ
वरसाउ, सामी गोयम गुणान्हो होस सिवपुर ठाउ ॥२७॥

भाषा (बाळ घडा)

जिम सहकार कायल टहुन, जिम कुसुमावन परिमळ
मडके, जिम चदन सौगधनिधि । जिम गगाजल लहिरया
लहणे, जिम उणयाचउ तर्ज भूलक, तिम गायम सामाग-
निधि ॥३८॥ जिम मानसरावर नियस हसा, जिम सुरतर-
वइ कणायवतसा, जिम मह्यरराजीववन । जिम रयणापर
रयणें विलासे, जिम अरर तारागण विरस, तिम गोयम गुरु
केल घने ॥३९॥ पूनमनिमि जिम ससियर सोढे, सुरतरु
महिमा जिम जगमाह पृगत्रि जिम मरसहरो । पनावन
जिम गिरिवर राज नर वइ घर जिम मगल गात्र, तिम
जिनशामन मुनि पवरो ॥४०॥ जिम गुरु तरवर साह
सासा, जिम उत्तम मख मधुरी भाषा, जिम वन वतकि
महमडे ए । जिम भूमिपति भुवचल चमके, जिम जिनम-
दिर घटा रणक, गायम लनधे गहगद्या य ॥४१॥ चिता-
मणि कर चढीश आज, सुरतर सार वल्लिय काज, काम-
कुम नटु वशि हुआ य । काम गर्वी पुर मन वामी, अष्ट-

महासिद्धि आवे धामी, सामी गोयम अणुसरी ए ॥४२॥
 प्रणव अश्वर पहिलो पभणी जे, माया धीजो श्रणा सुणी
 जे । गोपिति सोभा सभवी ए । देना धुग अग्दित नमाजे
 विनय पद उभ्भाय शुणीज इण मजे गोयम नमो ए
 ॥४३॥ पराग वमता काय फगीजे, देस दसतिर काय
 भमी जे रुवण काज आयास करा । प्रह उठी गोयम
 समरीज, काज समगल ततरिण सी, भे नवनिधि विलसे
 तिहा घर ए ॥४४॥ चरदयसय वारोत्तर वरसे, गोयम
 गणहर कवल दिवसे, रीयां रचित उपगारपणे । ग्राटहि
 मगल ए पभणीजे, परव महाच्छव पहिलो टीज, रिद्धि-
 वृद्धि कल्याण करा । ४५॥ धन माता जिण उधर धरियो
 ग्रन्थ पिता जिण कुल अरतरियो, धन्य सगुरु जिण दीरिस-
 यो ए । विनयवत विद्या भडाग, तसु गुण पुढरा न
 लवभड पाग उद जिम साखा विस्तरा ए । गायमस्वामीना
 रास भणीजे, नउविह मघ रलियावत फीजे, रिद्धि-वृद्धि
 कल्याण करा ॥४६॥ बुकुम चन्दने छडी दिवरावा,
 माणर मोतीना चाक पुरावो, रयण मिहासण वसणा ए
 तिहा वेठी गुरु देणना देणी भविइ जीवना काज सरसी,
 तिन नित मगल उदय करो ॥४७॥